ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

आनलाईन कक्षा में सबको स्वागत

कक्षा -६

हिन्दी

पाठ- 7

महान नरेंद्र

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

नरेंद्र को किताबें पढ़ने का भी बड़ा शौक था। जब वे मेरठ में थे तो प्रतिदिन पुस्तकालय से एक किताब लाया करते थे। एक ही दिन में पढ़कर उसे लौटा देते थे और दूसरी पुस्तक ले आते। जब लगातार कुछ दिनों तक यही क्रम चला तो पुस्तकालय के अधिकारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा–नरेंद्र पुस्तकें पढ़ता भी है या केवल पढ़ने का ढोंग ही करता है। एक दिन अधिकारी ने नरेंद्र से पूछ ही लिया। नरेंद्र ने कहा, "मैंने आपके यहाँ से ली सभी पुस्तकों को अच्छी तरह पढ़ा है। आप चाहें तो मुझसे किसी भी किताब से प्रश्न पूछ सकते हैं।" अधिकारी ने नरेंद्र की लौटाई किताब उठाई और एक पृष्ठ खोलकर प्रश्न पूछना शुरू किया। नरेंद्र ने उनके सभी प्रश्नों के सही-सही उत्तर दे दिए। अधिकारी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने नरेंद्र से पूछा, "ऐसा कैसे हो सकता है?"

नरेंद्र ने कहा, "एक छोटा बच्चा जब पढ़ता है, तब वह एक-एक अक्षर को जोड़-जोड़कर पढ़ता है। तब उसकी दृष्टि एक-एक अक्षर पर रहती है। लेकिन कुछ दिन बाद वह एक-एक अक्षर जोड़कर नहीं पढ़ता। तब उसकी नज़र रहती है एक-एक शब्द पर। फिर लगातार अभ्यास के बाद, वह एक ही दृष्टि में एक वाक्य को पढ़ने लगता है। धीरे-धीरे भाव-ग्रहण करने की क्षमता बढ़ती जाती है और एक नज़र में पूरा पृष्ठ पढ़ा जा सकता है। मैं इसी तरह पढ़ता हूँ।" नरेंद्र ने आगे कहा, "यह सिर्फ़

अभ्यास है, एकाग्रता है। मन लगाकर पढ़ने से यह सब संभव है।"

बड़े होकर नरेंद्रनाथ ने संन्यास ले लिया और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने लगे। उन्हें अपने देश और देशवासियों से बहुत प्यार था। उन्होंने हमेशा देश को संगठित और शक्तिशाली बनाने का संदेश दिया। देश से अज्ञानता और अंधविश्वास को दूर हटाने का प्रयत्न किया। अपने देशवासियों को जगाने के लिए सिंह गर्जना करते हुए उन्होंने कहा, "उठो! जागो! आगे बढ़ो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको नहीं।"

—संकलित

शब्दार्थ-

संगठित- एकत्रित
लक्ष्य- निश्चित उद्देश्य

अर्थबोध –

नरेन्द्र को किताबें पढ़ने का शौक था इसीलिए वे पुस्तकालय से पुस्तक लाकर एक ही रात में पढ़ लेते थे।यह देख पुस्तकालय के अधिकारी को आश्चर्य हुआ। उन्हों ने एक दिन पूछा कि तुम पुस्तक ले कर पड़ते हो या दिखावा करते हो। नरेंद्र ने उन्हें कहा कि वे सभी पुस्तक पड़ते हैं। नरेंद्र को परखने के लिए अधिकारी उस पुस्तक से उन्हें प्रश्न पुछते हैं और नरेन्द्र उस का सही सही उत्तर दे दिया। यह देख अधिकारी आश्चर्य हो गए। तभी नरेन्द्र ने कहा कि यह अभ्यास और एकाग्रता के कारण हो सकता है। मन लगाकर पढ़ने से यह संभव है।नरेन्द्र बहुत धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन किया। देश को संगठित और शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया। उन्होंने देशवासीयों को कहा उठो, जागो ,आगे बढ़ो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको नहीं।

विलोम शब्द-
निर्भीकता - भीरुता
प्रसिद्ध - अप्रसिद्ध
धार्मिक - अधार्मिक
उच्च – निम्न
तीव्र - मन्द
प्रखर – मन्द
प्रवीण – अप्रवीण
विश्वास – अविश्वास
निष्ठा – अनिष्ठा
शक्तिशाली - दुर्बल

संबंधित प्रश्न -

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

1.नरेंद्र किस कार्य में प्रवीण थे?
2. नरेंद्र को किस बात का शौक था?
3. किस के प्रति नरेंद्र की निष्ठा थी?
4. नरेंद्र ने सिंह गुर्जन करते हुए क्या कहा?
5. नरेंद्र ने संन्यास लेकर क्या किया?
6.अधिकारी क्यों आश्चर्य चकित हो गए?
7.पढ़ने के कौशल के बारे में नरेन्द्र क्या कहते हैं?
8.नरेन्द्र बड़े होकर क्या किए?
9.नरेन्द्र देशवासियों को क्या संदेश दिए थे?

गृहकार्य - पढ़ाए गए पाठ को पढ़ो।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP